श्री वीतरागाय नमः

पेंतीस बोल

तथा

शिखामणादि संग्रह ।

समाहर्ता—मुनि देवविजय ।

पू. शासनसम्राट्सूरिचक्रचक्रवर्ति जगद्गुरु तीर्थप्रभावनैकबद्धलक्ष्य तपागच्छाधिपति प्रातःस्मरणीय आचार्यमहाराजश्री श्री श्रीमद् विजयनेमिसूरीश्वरजीमहाराज के पट्टालंकार शास्त्रविशारद व्याख्यान-वाचस्पति कविरत्न आचार्य विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न मुनि देवविजय के उपदेशसे

द्रव्यसहायक तथा प्रकाशक

शेठ अभयराजजी शिवबक्षजी कोचर

वीर सं २४७०] नकल ५००] [विक्रम सं २०००

मूल्य अमूल्य तत्त्वग्रहण

मुद्रक -शाह गुलाबचंद लल्लुभाई, श्री महोदय प्री प्रेस-भावनगर

यह अत्यन्त सराहनीय है। आप धनाढ्य होते हुए भी निराभिमानी है। आपकी प्रकृति सरल एव दयान्वित है। आपके एक फर्म कलकत्ते मेंबहादुरमल अभयराजजी नामसे कार्य सम्पन्न कर रहे हैं। आपने वि० स० १९९८ मे आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को व्याख्यानवाचस्पति परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरीश्वरजी महाराज सहाब के सदुपदेश से "उपधानतप" कराया था, और उस तप की पूर्णाहुति के समय आपने तप करनेवालों को चाँदी की रकाबी की प्रभावना की थी। यहाँ पर कोचरों की दादावाडी में रू० ५०१ आपने मरम्मत किया है। इस प्रकार आपने दान–पुण्यादि अनेक सुकृत्यों द्वारा अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया है और करते हैं। अब आपके चार सुशील एव धर्मरुचि सन्तान (तीन सुपुत्र) इस प्रकार है। भँवरलालजी आणदमलजी, और दूलीचन्दजी हैं। अन्त मे आपके सुपुत्र भी आपके गुणों का अनुकरण कर पुण्योपार्जन लक्ष्मी का सद्व्यय करके महान् पुण्य के भागी बनेंगे ऐसी हम आशा रखते हैं।

(२) श्रीमान् सेठ शिवबक्षजी कोचर का सक्षिप्त जीवन

आपका जन्म वि० स० १९४३ मे श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को हुआ। आपके पिताजी का नाम हस्तमलजी था। वे स्वर्गीय सेठ बादरमलजी के छोटे भाई थे। आपको शिक्षा पर पूरा प्रेम है तथा धार्मिक विषयों में भी आप पूर्ण उत्साह से भाग लेते हैं। आपकी वृत्ति उदार तथा सरल है। आपका रहनसहन सादे एव अनुकरणीय है। जिस समय श्रीमान् सेठ अभयराजजी साहब कोचरने 'उपधान' तप कराया था उस समय आपने भी

उपधान तप करनेवाले महानुभावों को चांदी की रकाबी और चांदी की कटोरी की प्रभावना की थी। इस प्रकार आप अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय अनेक सुकृत्यो मे और सुपात्र मे समय समय पर किया करते हैं। आपने इस पुस्तक को प्रकाशित करने मे जो आर्थिक सहायता दी है वह अत्यन्त प्रशसनीय है।

आपका एक फर्म मेघराज सम्पतलाल के नाम से कलकत्ते में चलता है। वहा आप अपना व्यापारिक कार्य भी सुचारु रूप से कर रहे हैं। अब आपके तीन सुपुत्र एव एक सुपुत्री है जिनके नाम मेघराजजी, सम्पतलालजी और जतनलालजी हैं। वे भी विनयी एव धार्मिक भावनावाले हैं।

अन्त में हमारी यही अभिलाषा है कि जिस प्रकार आप अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय ज्ञान-प्रचारार्थ एव दान-पुण्यादि सुकृत्यो में किया करते है इस से भी अधिकाधिक करते रहेंगे। "सुज्ञेषु किम् बहुना"।

मास्तर रामचन्द तथा पूनमचन्द कोचरने प्रेसकोपी की नकल करने लिए जो अमूल्य सहायता दी है अत उनको धन्यवाद है।

वि स २००० (ज्ञानपचमी) ता २-११-४३

निवेदक:
श्री सघसेवक,
सालवी आत्माराम चोथलदास
(पाटणनिवासी)
धर्माध्यापक,
बी जे एस आर, बिकानेर.

विषयसूची



॥ ॐ अर्हम् नम ॥

॥ श्री गुरुविजयनमिसूरीश्वरभ्यो नम॰ ॥

॥श्री पांत्रीश बोल का थोकड़ा

तथा

शिखामणादि संग्रह ॥



(१) पहले बोले गति चार

१ नरक गति, २ तिर्यंच गति, ३ मनुष्य गति, ४ देव गति ।

(२) दूसरा बोले जाति पांच

एकेन्द्रिय जाति, बेइन्द्रिय जाति, तेइन्द्रिय जाति, चौरेन्द्रिय जाति, पचेन्द्रिय जाति ।

(३) तीसरे बोले काय छ ६

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय।

(४) चौथे बोले इन्द्रिय पांच

श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय।

(५) पांचमे बोले पर्याप्ति ६

आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोश्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और मनपर्याप्ति।

(६) छट्ठे बोले प्राण दश

पाच इन्द्रिय, तथा मनवल, वचनवल, कायवल ये ३ वल, एव ये आठ, तथा नवमा श्वासोश्वास और आयु ये दश प्राण जाणना।

(७) सातमे बोले शरीर पांच

औदारिकशरीर, वैक्रियशरीर, आहारकशरीर, तेजसशरीर तथा कार्मणशरीर ये पाच शरीर समझना।

(८) आठमे बोले पन्द्रह योग

सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग तथा व्यवहार मनोयोग, ये मन के चार योग, तथा सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग, मिश्र वचनयोग और व्यवहार वचनयोग ये चार वचनयोग, औदारिक काययोग, मिश्रकाययोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रियमिश्र काययोग, आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग और कार्मण काययोग, ये सात काया के योग एव सब मिलाकर १५ योग जाणना।

(९) नवमे बोले उपयोग बार

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन-

पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पाच ज्ञान,तथा मति-अज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभगअज्ञान, ए तीन अज्ञान और चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि-दर्शन और केवलदर्शन एव चार दर्शन मिल-कर वार उपयोग जाणना ।

(१०) दशमे वोले कर्म आठ

ज्ञानावरणीय कर्म,दर्शनावरणीय कर्म, वेद-नीय कर्म, मोहनीय कर्म, आयु कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म अने अतराय कर्म ए आठ कर्म जाणना।

(११) अगीयारमे वोले गुणस्थानक चौद

मिथ्यात्व गुणठाणु, सास्वादन गुणठाणु, मिश्र गुणठाणु, अव्रतिसम्यग्दृष्टि गुणठाणु, देशविरति गुणठाणु, प्रमत्त गुणठाणु, अप्रमत्त गुणठाणु, निवृत्तिवादर गुणठाणु, अनिवृत्ति-वादर गुणठाणु, सूक्ष्मसपराय गुणठाणु, उप-शातमोह गुणठाणु, क्षीणमोह गुणठाणु, सयोगी

केवली गुणठाणु और अयोगी केवली गुणठाणु, एवं चौद गुणठाणा जाणना ।

(१२) बारमे बोले पंचइन्द्रिय का २३ विषय

जीवशब्द, अजीवशब्द और मिश्रशब्द—ए त्रण विषय श्रोत्रेंद्रिय का है और कालो, नीलो, पीलो, रातो अने धोलो—ए पाच विषय चक्षुरिंद्रिय का है और सुरभिगध अने दुरभिगध—ए बे विषय घ्राणेंद्रिय का है तथा कडवो, कषायेलो, खाटो, मीठो अने तीखो—ए पांच विषय रसेंद्रिय का है तथा सुवालो, खरखरो, हलवो, भारे, शीत, उष्ण, लूखो अने चोपड्यो—ए आठ विषय स्पर्शेंद्रिय का है एव सर्व मिलकर पाच इंद्रिय का त्रेवीस विषय जाणना ।

(१३) तेरमे बोले दश प्रकारका मिथ्यात्व

जीवने अजीव करी जाणे तो मिथ्यात्व, अजीवने जीव करी जाणे तो मिथ्यात्व, धर्मने

अधर्म करी जाणे तो मिथ्यात्व, अधर्मने धर्म करी जाणे तो मिथ्यात्व, साधुने असाधु करी जाणे तो मिथ्यात्व, असाधुने साधु करी जाणे तो मिथ्यात्व, सवरभावसेवनरूप मोक्षमार्ग, तेने उन्मार्ग करी सद्दहे ते मिथ्यात्व, विषयादि सेवनरूप उन्मार्ग तेने मोक्षमार्ग करी जाणे ते मिथ्यात्व, वायरा आदिक रूपी पदार्थने अरूपी करी सद्दहे ते मिथ्यात्व, मोक्षादिक अरूपी पदार्थने रूपी करी सद्दहे ते मिथ्यात्व—ए दश प्रकार का मिथ्यात्व जाणना ।

(१४) चौदमे बोले नव तत्त्वका जाणने के लीये एक सो ने पन्नर बोल जाणना

जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रवतत्त्व, सवरतत्त्व, निर्जरातत्त्व, बधतत्त्व, मोक्षतत्त्व, ए नव तत्त्व मे जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व जाणवा योग्य है, पापतत्त्व, आश्रवतत्त्व, बधतत्त्व जाणने और छोडवा योग्य है, सवर-

तत्त्व, निर्जरातत्त्व, मोक्षतत्त्व, आदरवा योग्य है और पुण्यतत्त्व नैगमनय से आदरवा योग्य है, व्यवहार से जाणने योग्य है, निश्चयनय से छोडने योग्य है ॥ प्रथम जीवतत्त्व का वोल चौदह है॥ प्रथम सुक्ष्म एकेंद्रिय, दूसरा वादर एकेंद्रिय, तीजा वेन्द्रिय, चौथा तेइन्द्रिय, पांचवा चौरेन्द्रिय छट्टा असन्नि पचेंद्रिय, सातवॉ सन्निपचेन्द्रिय ये सात जाति के जीव हैं। वे जीव सात पर्याप्त और अपर्याप्ता है। इस तरह दो दो भेद होने से जीव के चौदह भेद होते हैं॥

दूसरे अजीव तत्त्व के चौदह वोल कहते है ॥ धर्मास्तिकाय का खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद तथा अधर्मास्ति काय का खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद तथा आकाशास्तिकाय के खध, देश और प्रदेश ये तीन भेद और काल द्रव्य का एक भेद इस प्रकार दश भेद अरूपी अजीव के होते है। उसमें

सहित पुद्गल का खध, देश, प्रदेश और परमाणु ये चार भेद रूपी कहलाते हैं—उन सब को मिलकर चौदह भेद अजीव तत्त्व के होते है ।

पुण्य नव प्रकार से वधता है । वे नव भेद लिखे जाते हैं—अन्नपुण्ये, पणपुन्ये, शेणपुण्ये, सेणपुण्ये, वच्छपुण्ये, मनपुण्ये, वयपुण्ये, कायपुण्ये, और नमस्कारपुण्ये—इस तरह नव प्रकार के पुण्यवध हैं ।

पाप अढार प्रकार से वधता है, वे लिखे जाते हैं—प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व—शल्य ये अगारह भेद हैं ।

आश्रव वीश प्रकार के हैं—१ मिथ्यात्वाश्रव, २ अव्रताश्रव, ३ प्रमादाश्रव, ४ कपा-

याश्रव, ५ योगाश्रव, ६ हिंसा करना यह प्राणातिपाताश्रव, ७ मृषावादाश्रव, चोरी करना यह ८ अदत्तादानाश्रव, ९ कुशीलाश्रव, १० परिग्रह रखना सो परिग्रहाश्रव, ११ श्रोत्रेंद्रिय-मोकली राखे सो श्रोत्रेंद्रियाश्रव, १२ चक्षुरिंद्रिय से मोकली राखे सो चक्षुरिंद्रियाश्रव, १३ घाणेंद्रिय मोकली राखे सो घ्राणेंद्रियाश्रव, १४ रसेंद्रिय मोकली राखे सो रसेंद्रियाश्रव, १५ स्पर्शेंद्रिय मोकली राखे सो स्पर्शेंद्रियाश्रव, उसी तरह मन आदि तीन को मोकला राखे सो १६ मनाश्रव, १७ वचनाश्रव और १८ कायाश्रव, १९ भंडोपगरण लेने और मूकने की अजयणा करे सो भंडोकरणाश्रव, २० शुचि कुसग सेवन करे सो कुसगाश्रव—इस प्रकार वीश भेद हुवे।

सवर के वीश भेद है—१ समकितसंवर, २ व्रतपच्चखाणसवर, ३ अप्रमादसंवर, ४ अक

पायसवर, ५ अयोगसवर, ६ प्राणातिपात-सवर, ७ मृपावाद न वोले सो सवर, ८ अदत्त न ले वह सवर, ९ मैथुन न सेवे सो सवर, १० परिग्रह न रखे वह सवर, ११ श्रोत्रें-द्रिय को वश में रखे सो सवर, १२ चक्षुरिन्द्रिय को वश में रखे सो सवर, १३ घ्राणेद्रिय को वश मे रखे सो सवर, १४ रसेन्द्रिय को वश मे रखे सो संवर, १५ स्पर्शेन्द्रिय को वश मे रखे सो सवर, १६ मन वश रखे सो मन सवर, १७ वचन वश में रखे सो वचनसवर, १८ काय वश करे सो कायसवर, १९ भडोपकरण की अजयणा न करे सो सवर, २० शुचिकुसग न सेवे सो सवर ॥

निर्जरा के १२ भेदे कहेते है—१ अनशन ... ३ वृत्तिसक्षेपतप, ...

कृत्यतप, १० सज्झायतप, ११ ध्यानतप, १२ कायोत्सर्गतप इस प्रकार वारह हुवे ।

वंधतत्त्व के चार भेद कहेते हैं—प्रकृतिवंध, स्थितिवध, अनुभागवध और प्रदेशवध इस तरह चार वंधतत्त्व के भेद हुवे ।

(१५) पन्द्रहवें वोले आत्मा आठ ८

१ द्रव्यात्मा, २ कषायात्मा, ३ योगात्मा, ४ उपयोगात्मा, ५ ज्ञानात्मा, ६ दर्शनात्मा, ७ चारित्रात्मा, ८ वीर्यात्मा, इस प्रकार आठ आत्मा के भेद जाणना ।

(१६) सोलहवें वोले २४ दंडक

१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्ण-कुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीप-कुमार, ७ दिशाकुमार, ८ उदधिकुमार, ९ स्तनितकुमार, १० वायुकुमार ए दश भुवनपति के दंडक हुवे ऐसा जाणना, तथा सात नारकी

के एक दडक तथा पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय ये पांच स्थावर के पांच दडक तथा वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय ये तीन विकलेन्द्रिय के तीन दडक ये ओगणीस हुवे तथा वीशवॉ तिर्यंचपंचेन्द्रिय का, एकवीशवॉ मनुष्य का, बावीशवॉ व्यन्तरिक देवता का, तेवीशवॉ ज्योतिपी देवता का तथा चोवीशवॉ वैमानिक देवता का इस तरह चोवीश दडक हुवे ऐसा जाणना ।

(१७) सतरवें बोले लेश्या ६

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या पद्मलेश्या, और शुक्ललेश्या । इस प्रकार लेश्या छ जाणना ।

(१८) अढारवें बोले दृष्टि तीन

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यात्वदृष्टि, ओर मिश्रदृष्टि ये तीन दृष्टि जाणना ।

(१९) उन्नीसवें बोले ध्यान चार

आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान ये चार ध्यान जाणना।

(२०) बीसवें बोले षट्द्रव्य का जाणपणा का तीस बोल.

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल। धर्मास्तिकाय का पांच बोल जाणिये-द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से चौद राजलोक प्रमाण, काल से आदि अत रहित, भाव से अरूपी वर्ण नहीं, रस नही, गन्ध नहीं, स्पर्श नही, गुण से जीव पुद्गल को चलने सहायता देनेवाला ये पांच बोल धर्मास्तिकार्य के है।

अधर्मास्तिकाय द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से चौदह राजलोक प्रमाण, काल से अनादि

अनत, भाव से अरूपी और गुण से स्थिर रहने पर सहायता देनेवाला ये पाच बोल जाणना।

आकाशास्तिकाय–द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से लोकालोकप्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से अरूपी तथा गुण से अवकाश देनेवाला–ये पाच बोल जाणना।

कालद्रव्य द्रव्य से एक द्रव्य, क्षेत्र से अढीद्वीपप्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से अरूपी, गुण से वर्त्तना लक्षण ये पाच बोल जाणना।

पुद्गलास्तिकाय द्रव्य से अनत द्रव्य, क्षेत्र से चौदह राजलोक प्रमाण, काल से अनादि अनत, भाव से रूपी तथा गुण से पूरण, गलन सडन, पडन नाश होना ये लक्षण यह पाच बोल जाणना।

जीवास्तिकाय–द्रव्य से अनताद्रव्य, क्षे से चौदह राजलोकप्रमाण, काल से अना

अनत, भाव से अरूपी तथा गुण से चेतन गुण लक्षण ये पाच वोल जाणना। इस प्रकार सर्व मिलाकर तीस वोल समझीए।

(२१) इक्कीसवें वोले जीवराशी, अजीवराशी

इक्कीसवे वोले राशी दो—जीवराशी, अजीवराशी। जीवराशी के ५६३ भेद हैं। अजीवराशी के रूपी अरूपी ५६० भेद होते हैं। नारकी के भेद १४ नाम और गोत्र रत्नप्रभादि। तिर्यंच का अडतालीस भेद—जलचर, थलचर, खेचर, गर्भज, समुर्च्छिम पर्याप्ता, अपर्याप्ता। पृथ्वीकाय के दो भेद—सूक्ष्म और वादर। सूक्ष्म किसे कहते हैं, तमाम लोक में काजल की कोटडी समान भरा है, जलाने पर जले नहीं, मारने पर मरे नही इसमे पर्याप्ता और अपर्याप्ता जाणना। पृथ्वीकाय वादर के दो भेद—पर्याप्ता और अपर्याप्ता। अप्काय के चार भेद—सूक्ष्म,

बादर, पर्याप्ता और अपर्याप्ता। तेऊकाय के चार भेद, वायुकाय के चार भेद, ये दोनों के सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता और अपर्याप्ता। वनस्पतिकाय के ६ भेद—सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक ये तीन के पर्याप्ता और अपर्याप्ता सर्व मिलकर २२ भेद होते हैं। बेइन्द्रिय २, तेइन्द्रिय २, चौरिन्द्रिय २, पर्याप्ता और अपर्याप्ता हरेक ये सर्व मिलकर ६ भेद होते हैं। पचेन्द्रिय के २० भेद—१ जलचर, २ थलचर, ३ खेचर, ४ उरपरिसर्प, ५ भुजपरिसर्प ये पाच सन्नि और पाच असन्नि ये दश पर्याप्ता और दश अपर्याप्ता ये सब मिल कर २० भेद होते हैं, तथा सब मिलाकर तिर्यंच के ४८ भेद होते हैं।

मनुष्य के ३०३ भेद होते हैं—१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अन्तर्द्वीप गर्भज और समुर्च्छिम। १०१ पर्याप्ता, १०१ अपर्याप्ता, १०१ समुर्च्छिम सर्व भेद ३०३ होते हैं।

देवताओं के १९८ भेद—१० भुवनपति, १५ परधामी, ८ व्यन्तर, ८ वाणाव्यंन्तर, १० तिर्यंचजृभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किलविषक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रेवयक, ५ अनुत्तर—ये ९९ भेद पर्याप्ता और अपर्याप्ता गिनने पर १९८ भेद होते हैं।

अब अजीव राशि के भेद कहेते हैं—अधर्मास्तिकाय आदि के रूपी, अरूपी। अरूपी के ३० भेद, रूपी के ५३० भेद होते हैं सर्व मिलाकर अजीवराशि के ५६० भेद गुरुगम से जाणना।

(२२) बाइसवें बोले श्रावक के बारह व्रत

१ पहेले व्रत में त्रस जीव को मारे नहीं और स्थावर जीव की रक्षा करे, २ दुसरे व्रत में पॉच बडा झूठ बोलना नहीं, ३ तीसरे व्रत मे बडी चोरी करे नहीं, ४ चौथे व्रत में पुरुष के

लिये परस्त्री और वेश्या आदि का त्याग, और अपनी स्त्री की मर्यादा करे। स्त्री के लिये परपुरुष का सर्वथा त्याग, अपने पति में सन्तोष रखना, ५ पॉचवें व्रत में धन, धान्य, परिग्रह की मर्यादा करे, ६ छट्टे व्रत में दिशा की मर्यादा करे, ७ सातवें व्रत पन्द्रह कर्मादान की मर्यादा करे, ८ आठवें व्रत अनर्थदण्ड का त्याग करना। जिस क्रिया करने से कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं होता, केवल पाप ही लगता है, जैसे रास्ते चलते हुवे पशु को मारना, नदी, तालाव आदि में स्नान करने का लोगों को प्रेरणा करना, इत्यादि पापोपदेशों को अनर्थदण्ड कहते हैं। ९ नवमे व्रत में ४८ मिनिट परिमाण सामायिक करना, १० दशवें व्रत में देशावकाशिक व्रत में, कम से कम दो तीन सामायिक करे, छट्टे व्रत में रखे हुए दिशा परिणाम का सकोच करना, ११ ग्यारवें व्रत में पोषध करना, १२

वारवें व्रत में अतिथि शुद्ध आहार साधु को दान देना, उनके अभाव में स्वधर्मीवात्सल्य करना।

(२३) तेईसवें वोले साधुओं का पाँच महाव्रत कहते हैं।

१ प्रथम महाव्रत में साधुजी महाराज जीव की हिंसा करते नहीं, कराते नहीं और करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से। २ दूसरे महाव्रत मे साधुजी महाराज असत्य भाषण करते नहीं, कराते नहीं, करते हुवे को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से। ३ तृतीय महाव्रत में साधुजी महाराज चोरी करते नहीं, कराते नहीं, करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से। ४ चतुर्थ महाव्रन में साधुजी महाराज स्त्रीसग करने नहीं, कराते नहीं, करते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से। ५ पच महाव्रत में साधुजी महाराज परिग्रह रखते

नहीं, रखवाते नहीं और रखते हुए को अच्छा समझते नहीं, मन, वचन और काया से।

महाव्रत किस को कहते हैं ?—हिंसा, झूठ बोलना, चोरी करना, अब्रह्मचर्य, परिग्रह रखना, इन पाचों को तीन करण, तीन योग से सर्वथा त्याग करनेरूप सर्वविरति को महाव्रत कहते हैं।

अब पाच महाव्रत का भागा कहते हैं। प्रथम महाव्रत का ८१ भागा होता है—९ पृथ्वीकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं और मारते को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ अपूकाय को हणे नहीं, हणावे नहीं, हणनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ तेउकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ वायुकाय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ वनस्पतिकाय

को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ बेइन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नहीं और मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से, ९ तेइन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नही, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ चौरिन्द्रिय को मारे नहीं मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं मन, वचन काया से । ९ पचेन्द्रिय को मारे नहीं, मरावे नहीं, मारनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन वचन काया से ।

बीजा मृषावाद विरमणव्रत का भागा ३६—
९ क्रोध के आवेश से असत्य बोले नही, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ हास्य से झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ भयसे

झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ लोभसे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलनेवाले को अच्छा समझे नहीं। मन, वचन, काया से।

तीसरा अदत्तादन विरमणव्रत का भागा ५४—९ अल्प चोरी करे नहीं, करावे नहीं करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ घणी वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ नानी (छोटी, थोडी) चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ बडी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ सचित्त वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन,

काया से । ९ अचित्त वस्तु की चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से ।

चौथा मैथुन विरमण व्रत का भांगा २७—
९ देवता की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ मनुष्य की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ तिर्यंच की स्त्री को भोगे नहीं, भोगावे नहीं, भोगनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से ।

पाचवॉ परिग्रह विरमण व्रत के ५४ भांगा—
९ अल्प परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन काया से । ९ ज्यादा परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से । ९ थोड़ा परिग्रह

राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ मोटा परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ सचित्त वस्तु का परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। ९ अचित्त वस्तु का परिग्रह राखे नहीं, रखवावे नहीं, रखनेवाले को अच्छा समझे नहीं, मन, वचन, काया से। इस प्रकार पच महाव्रत के सब मिलाकर २५२ भागा हुवा।

(२४) चौवीसमें बोले व्रत का ४९ भांगा ॥

प्रथम एक करण ने एक योग से नव भागा होता है, सो कहते हैं—१ मन से करे नहीं, २ वचन से करे नहीं, ३ काया से करे नहीं, ४ मन से करावे नहीं, ५ वचन से करा-

वे नहीं, ६ काया से करावे नहीं, ७ मन से अनुमोदे नहीं, ८ वचन से अनुमोदे नहीं, ९ काया से अनुमोदे नहीं ।

एक करण के दो योग से नव भॉगा होता है, सो कहते हैं–१ मन और वचन से करे नहीं, २ मन और काया से करे नहीं, ३ वचन और काया से करे नही, ४ मन और वचन से करावे नही, ५ मन और काया से करावे नही, ६ वचन और काया से करावे नहीं, ७ मन और वचन से अनुमोदे नहीं, ८ मन और काया मे अनुमोदे नहीं, ९ वचन और काया से अनुमोदे नहीं ।

एक करण और तीन योग से नव भॉगा होता है, सो कहते है –१ मन, वचन, काया से करे नहीं, २ मन, वचन, काया से करावे नहीं, ३ मन, वचन, काया से अनुमोदे नहीं, ।

वे (दो) करण और एक योग से नव

भांगा होता हैं –१ मन से करे नहीं, करावे नहीं, २ वचन से करे नहीं, करावे नहीं, ३ काया से करे नहीं, करावे नहीं, ४ मन से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ५ वचन से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ६ काया से करे नहीं, अनुमोदे नहीं, ७ मन से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, ८ वचन से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, ९ काया से करावे नहीं, अनुमोदे नहीं ।

दो करण और दो योग से नव भागा होता हैं –१ करे नहीं, करावे नहीं, मन से और वचन से, २ करे नहीं, करावे नहीं, मन से और काया से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, वचन से और काया से, ४ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन से, ५ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काया से, ६ करे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से और काया से, ७ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन

से, ८ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काया से, ९ करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से और काया से।

दो करण और तीन योग से तीन भॉगा (३) होता हैः—१ करु नहीं, करावे नहीं, मन से, वचन से और काया से, २ करुँ नहीं, अनु-मोदे नहीं, मन से, वचन से, और काया से, ३ करावे नहीं, अनुमोदे नही, मन से, वचन से, काया से।

तीन करण और एक योग से तीन भांगा (३) होता हैं—१ करे नहीं, करावे नहीं, अनु-मोदे नहीं, मन से, २ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, वचन से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, काया से।

तीन करण और दो योग से तीन भांगा होता है'—१ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और वचन से, २ करे नहीं,

करावे नहीं, अनुमोदे नहीं, मन से और काय
से, ३ करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं
वचन और काया से।

तीन करण और तीन योग से एक भाग
होता है.–१ मन से, वचन से, काया से, क
नहीं, करावे नहीं, अनुमोदे नहीं।

सर्व मिलाकर नीचे प्रमाणे होते है–ए
करण और एक योग से नव, एक करण औ
दो योग से नव, एक करण और तीन योग
तीन दो करण और एक योग से नव, दो कर
और दो योग से नव, दो करण और ती
योग से तीन, तीन करण और एक योग
तीन, तीन करण, दो योग से तीन, तीन कर
तीन योग से एक याने ४९ भॉगा होता हैं।

(२५) पच्चीसवें बोले पांच चारित्र [५

१ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनी

चारित्र, ३ परिहारविशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्मसंपराय चारित्र, ५ यथाख्यात चारित्र ।

(२६) छवीसवें वोले नय सात [७]

१ नैगमनय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहारनय, ४ ऋजुसूत्रनय, ५ शब्दनय, ६ समभिरूढनय, ७ एवभूतनय ।

(२७) सत्तावीसमें वोले चार निक्षेप [४]

१ नामानिक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, ३ द्रव्यनिक्षेप, ४ भावनिक्षेप ।

(२८) अठावीसवें वोले पांच समकित [५]

१ उपशम समकित, २ क्षयोपशम समकित, ३ क्षायिक समकित, ४ सास्वादन समकित, ५ वेदक समकित ।

(२९) उन्नतीसवें वोले नव रस [९]

१ श्रृंगाररस, २ वीररस, ३ करुणरस, ४

हास्यरस ५ रौद्ररस, ६ भयानकरस, ७ अद्भुतरस, ८ विभत्सरस, ९ शातरस ।

(३०) त्रीशवें बोले बावीश अभक्ष्य [२२]

१ वड का पींपु, २ पीपल का पींपु, ३ ऊँबर का फल, ४ पिपरी पींपु, ५ कठुंवर का फल, ६ शहद, ७ माखण, ८ मास, ९ मदिरा १० ११ विष ते (अफीण), सोमल प्रमुख, १२ करहा (ओला), १३ सर्व जाति की कच्ची मिट्टी, १४ रात्रिभोजन, १५ बहुबीज फल, १६ अनतकाय कदमूल फल, १७ बोलानु अथाणु, १८ काचां गोरसमा करेला वडा, १९ वेंगण रींगणा, २० जेनु नाम न जाणता होइए एवा अजाण्या फल, फूल, २१ तुच्छ फल ते चणीया बोर तथा कुअली वस्तु, अत्यत काचा फल, तथा पीलूडा, पीचु प्रमुख, २२ चलित रस, ते सडेलु अन्नादिक जेनो काल पूरो थयाथी स्वाद बदल्यो होय, चलित रस थई गया होय ।

(३१) एकत्रीश में बोले चार अनुयोग [४]

१ द्रव्यानुयोग, २ गणितानुयोग, ३ चरण-करणानुयोग, ४ धर्मकथानुयोग ।

(३२) बतीस में बोले तीन तत्त्व [३]

१ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व ।

(३३) तेतीस में बोले पांच समवाय [५]

१ काल, २ स्वभाव, ३ नियति, ४ पूर्व-कृत कर्म, ५ पुरुषकार ते उद्यम ।

(३४) चौतीस में बोले चार प्रकार का पाखंडीयो

१ एक क्रियावादी का एकसो अस्सी भेद (१८०), २ दूसरा अक्रियावादी का चौरासी भेद (८४), ३ तीसरा विनयवादी का बत्तीस भेद (३२), ४ अज्ञानवादी का सडसठ भेद

(६७) इस प्रकार सब मिलकर ३६३ भेद होते हैं, सो सूयगडागसूत्र से जाणना ।

(३५) पैतीस में बोले श्रावक का २१ गुण

१ क्षुद्र बुद्धि का न होय पण गभीर होय, २ पचेन्द्रिय स्पष्ट होय, रूपवत होय याने सर्व अगोपाग पूर्ण होय, ३ सौम्य प्रकृतिवाला होय, स्वभावे अपापकर्मी होय, ४ सदाचारी होय, सर्व लोक को वल्लभ (प्रिय) होय, प्रशसा करने योग्य होय, ५ संक्लिष्ट परिणाम से रहित होय, क्रूर चित्तवाला न होय, ६ इस लोक, परलोक के अपाय से डरे, और अपयश से डरे, ७ अशठ होय, दूसरे को ठगे नहीं, ८ दाक्षिण्यवालो होय, दूसरे की प्रार्थना को भग करे नहीं, ९ स्वकूलादिकनी लज्जावालो होय, अकार्य वर्जनीय होय, १० दयावत होय, ११ सौम्य दृष्टिवालो होय, १२ गुणी मनुष्यों का पक्षपाती होय, १३ भली धर्मकथा का उपदेश

देनेवाला होय, १४ सुशीलादि अनुकूल परिवारयुक्त होय, १५ ऊंचा विचारवाला, दीर्घदर्शी होय, १६ पक्षपात रहित, गुणदोषविशेष को जाणे, १७ वृद्ध पुरुष, जो परिपक्व बुद्धिवाला होय, उसकी सेवा करनेवाला और अनुयायीपणे चलनेवाला होय, १८ गुणी पुरुष का विनय करनेवाला होय, १९ किया हुवा उपकार का जाननेवाला होय, २० निर्लोभी हो कर अपनी स्वेच्छा से उपकार करे, २१ लब्धलक्ष से वह धर्मानुष्ठान व्यवहार का लक्ष प्राप्त हुवा हो,— यह एकवीश गुण जिसमें होय वह प्राणी धर्मरूप रत्न को प्राप्त करने योग्य होय । इति ॥



॥ अथ शिखामण का १९२ बोल ॥



१ कोई पण शुभ कार्य करता विलम्ब करना नहीं, २ मतलब विना पसारा करना नहीं, ३ ज्ञानी हो करके गर्व करना नहीं, ४ बनता सुधी क्षमा अवश्य धारण करनी, ५ घर की गुप्त बात किसी को कहना नहीं, ६ स्त्री और पुत्र की बूरी बात कहना नहीं, ७ मित्र से कोई प्रकार का भेद रखना नहीं, ८ बूरे मित्र का विश्वास करे नहीं, ९ प्रेम रखनेवाली स्त्री का विश्वास कर नहीं, १० कोई भी कार्य करते वक्त विचार करना, ११ माता पिता और गुरु तथा बड़े पुरुषों का विनय करे, १२ स्त्री को गुप्त बात कह नहीं, १३ पेट भराय इतने भोजन में सन्तोष रखना, १४ विद्या पढ़ने म सन्तोष रखे नहीं, १५ दान देते वक्त घबराना नहीं, १६ तपस्या करने मे पिछे हटे नहीं, १७ ग्रहण की हुई प्रतिज्ञा का भग करे नहीं, १८ अन्याय से द्रव्य उपार्जन करे नहीं, १९ शरीर की ताकत विचारे विना युद्ध करे नहीं, २० दु ख के समय म धैर्य को छोडे नहीं, २१ बूरे कार्य से दूर रहना, २२ बगुले के माफिक इन्द्रिय को वश मे रखे, २३ कुकडे की माफक प्रभाते सब से पहले उठना, २४ शरीर से आलस्य को दूर करना,

२५ निद्रा मे सचेत रहना, २६ मन चिंते काम को पूरा किये विना किसी को कहे नहीं, २७ सामरे के अन्दर चतुराई धारण करनी और मूर्खाई तजनी, २८ गुण लेने मे प्रयत्न करना, २९ नीच मनुष्य से भी उत्तम विद्या लेनी, ३० बरोबर के साथ प्रीति करनी, ३१ क्लेश के स्थान पर मौनपणा धारण करना, ३२ बड़े के साथ वैर करना नहीं, ३३ लेने देने में, भोजन मे, विद्या पढ़ने मे, व्यवपार में और वैद्य के सामने लज्जा करनी नहीं, ३४ क्लेश के स्थान मे खड़ा नहीं रहना, ३५ अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी, और शास्त्र की पुस्तक पर पैर (पग) नहीं लगाना, ३६ घी, तेल, दही, दूध, आदि खुले (उघाडा) रखे नहीं, ३७ वैद्य, गुरु, राजा, नदी, व्यवहारी (वाणीयो) ये पाँचों जहाँ पर न हो वहाँ पर रमना नहीं, ३८ नीच से विवाद करे नहीं, ३९ जिससे जीव को जोखम होना होवे तो वह धन का त्याग करना, ४० शत्रु के उपर निर्दयता करना नहीं, ४१ मूर्ख, कायर, अभिमानी, अन्यायी और दुष्ट इतने को स्वामी करना नहीं, ४२ मूर्ख को हितोपदेश देना नहीं, ४३ परस्त्री का सदा त्याग करना, ४४ इन्द्रियों को हमेशा वश मे रखना, ४५ मूर्ख से मित्रता करनी नहीं, ४६ लोभी को द्रव्य से वश करना, ४७ शक्ति होते हुवे भी आशा को भग करना नहीं, ४८ गुण विना मात्र आडम्बर से रीझवुँ नहीं, ४९ राजा खुश होवे तो पण विश्वास करना

नहीं, ५० एक अक्षर शिखानेवालें को भी गुरु मानना, ५१ पानी छाँण करके और देख कर पीना, ५२ प्राणान्त होने पर भी सत्य को छोड़ना नहीं, ५३ अपना अवगुण शोधी काढ़ना, ५४ राजा की स्त्री, गुरु की स्त्री, मित्र की स्त्री, सासू और अपनी माता इन पाँचों को माता समझना, ५५ कार्य और सत्कार विना किसी के घर जाना नहीं, ५६ वचन मे दारिद्रपणा रखना नहीं, ५७ लेखण (कलम), पुस्तक और स्त्री इन तीनों को किसी को देना नहीं, ५८ आमदानी देख कर खर्च करना, ५९ हरेक विद्या मुखपाठ रखनी, ६० स्वामी प्रसन्न होने पर गर्वित होना नहीं, ६१ करियाणु देखे विना हाथ दना नहीं, ६२ शस्त्र बाँधनेवाले तथा ब्राह्मण को उधार दना नहीं, ६३ नट, वटलेल, वेश्या तथा जुवारी को उधार दना नहीं, ६४ गुप्त धन देना तो हुशियारी से पक्का बन्दोबस्त करना, ६५ दो चार साक्षी राख्या विना धन देना नहीं, ६६ उधार लाया हुआ धन मुदत पहले द देना, ६७ घर मे पैसा होवे तो कर्जा करना नहीं, ६८ दना होय तो दने मे उद्यम रखना, ६९ प्रीतिवन्त के साथ प्राय: लेना देना करना नहीं, ७० चोरी की हुई वस्तु अगर मुफ्त मिले तो भी लेनी नहीं, ७१ दुराचारी को भागीदार बनाना नहीं, ७२ लाघण करना नहीं, ७३ खानीदार को किल्लीदार (खजानची) करना, ७४ लिया होय तथा दीया होय तो लिखने म आलस नहीं करना, ७५ नये नये गुमास्ता तथा

मुनीम करना नहीं, ७६ जाति के साथ नम्रता रखनी, ७७ स्त्री को मीठा वचन से बोलना, ७८ शत्रु के पेट में घुस कर वश करना, ७९ मित्र के पास भी साक्षी विना थापण (अनामत) रखनी नहीं, ८० एक दो बड़े आदमियों से जान पहिचान जरूर करनी, ८१ जहाँ तक बने किसी की गवाह नहीं भरनी, ८२ परदेश मे कैफी वस्तु (नशीली वस्तु) सेवन करनी नहीं, ८३ उत्सव छोड़ कर, गुरु और पिता को अपमान कर के, लड़के को रोता कर के, हत्या कर के, त्यार हुआ भोजन निअदी (छोड़ कर), रोता हुआ सुन कर, मैथुन कर के, ऊलटी कर के, नजीक आये हुए पर्व को तिरस्कार कर के (अवगुणी), दूध का भोजन कर के इतना वाना (जोश) कर के आत्महितैषी को परदेश जाना नहीं, ८४ जिस घर में कोई आदमी न होय वहाँ पर नहीं जाना, ८५ कारण विना अपने धन की आशा न करना, ८६ परदेश में आडंबर धारण करना, ८७ किसी की बात किसी को कहना नहीं, ८८ माता पिता की आज्ञा को भंग करना नहीं, ८९ मातापिता की सेवा चाकरी सच्चे मन से करना, ९० गुरु और माता पिता का हररोज पग दबाना, ९१ माता पिता के सामने झूठ बोलना नहीं, ९२ माता पिता के धार्मिक मनोरथों को पूरा करना, ९३ बड़े भाई को पिता समान जाणना, ९४ भाई की बूरी दशा को दूर करना, और कुमार्ग से बचाना, ९५ रोग मे, दुष्काल में (बूरे वख्त), शत्रु के

राजदरबार में, इतनी जगह भाई की मदद करना, ९६ कोई भी उत्तम काम में भाई को भूलना नहीं, ९७ नाटक, कौतुक, घणे जनों में स्त्री को जाने देना नहीं, ९८ स्त्री से भली प्रकार सेवा कराना, ९९ स्त्री को रात में बाहर जाने देना नहीं, १०० स्त्री क्रोध में हो तो उसको मनवा लेना चाहिए, १०१ स्त्री को घर के काम में द्रव्य देकर वर्तना, १०२ उत्सव के दिन सगासबंधी को भूलना नहीं, १०३ दु खी, सगा, संबंधीयों की सहायता करना, १०४ संबन्धी(कुटुंबी) से कदापि विरोध करना नहीं, १०५ जिस घर में एकली स्त्री हो उस घर में जाना नहीं, १०६ धर्म के काम में सगा संबन्धीयों को जुटाना, १०७ उवासी करते, छींक, डकार लेते मुख दबाना नहीं, १०८ उलटा व सीधा सोना नहीं, १०९ भोजन करते छींक आवे तो पानी पीना, ११० खड़े खड़े पेशाब करना नहीं, १११ खड़े खड़े पाणी पीना नहीं, ११२ सोते समय छाती पर हाथ रखना नहीं, ११३ कन्या अच्छे वंश(कुल) में देना, दु खी वंश में न देना, ११४ कन्या का द्रव्य लेना नहीं, ११५ कन्या

मुँह अपनी बड़ाई करना नहीं, १२२ बलवान होते हुए भी निरुद्यमी होना नहीं, १२३ कपटी के आडम्बर का विश्वास न करना, १२४ गई वस्तु का शोक न करना, १२५ शत्रु होय तो भी उसके मरण समय स्मशान जाना, १२६ शूर-वीर हो कर, निर्बल को दुःख देना नहीं, १२७ अति आपदा (कष्ट) पड़ने पर आत्मघात करना नहीं, १२८ हँसी करते किसी का मर्म प्रकाशना नहीं, १२९ हँसी करते किसी पर क्रोध करना नहीं, १३० दो आदमी विचार करते हो वहाँ नहीं जाना, १३१ मुखिया (पंच) इनकार करे, उस काम को करना नहीं, १३२ खराब काम कर के खुशी न होना, १३३ तपस्या करते क्षमा धारण करना, १३४ पढ़े हुवे शास्त्र को हररोज सभालते हुए रहना, १३५ पुरुषों को रात्रि में दर्पण देखना नहीं, १३६ शयन, मैथुन, निद्रा, आहार ये सन्ध्या समय वर्जना, १३७ रोटी देना पण ओटलो (स्थान) देना नहीं, १३८ सब से जाणपिछाण रखना, १३९ भोजन कर के एक प्रहर पूरा न हुआ उस समय तक फिर भोजन करना नहीं, दो प्रहर होने पर फिर भोजन कर लेना, दो प्रहर पूरा हो जाने पर भूखा रहना नहीं, १४० स्त्री की प्रशंसा उसके मरण बाद करना, १४१ राजा, देव, गुरु के पास खाली हाथ जाना नहीं, १४२ निर्लज स्त्री से हँसी न करना, १४३ शुभ कार्य में विलंब न करना, १४४ धूप से आकर तुरत पाणी पीना नहीं, १४५ आधी रात में उंचे स्वर(अवाज) से भेद की बातें कहना नहीं, १४६ भोजन

के बीच में और आखीर में जल पीना, १४७ अजीर्ण होने पर एक दो टक भोजन न करना, १४८ खुशी के समय दु:ख की बातें छोड़ देनी, १४९ कोई क्रोध के आवेश से कठोर वचन कहे, तो भी न्याय मार्ग को छोड़ना नहीं, १५० माता, पिता, गुरु, सेठ, स्वामी, राजा, इन की निंदा करना नहीं, १५१ मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलिन, धर्मनिंदक, कुशीलीओ, लोभी और चोर, इनकी संगति कभी भी करना नहीं, १५२ अनजान आदमी की बड़ाई करना नहीं, १५३ अनजान आदमी को अपने घर में न रखना, १५४ अनजान कुल के साथ सगाई करना नहीं, १५५ अनजान आदमी को नौकर न रखना, १५६ अपने से बड़े पुरुष उपर कोप न करना, १५७ बड़े पुरुष के साथ क्लेश नहीं करना, १५८ गुणी पुरुष के साथ वादविवाद न करना, १५९ दारिद्रता आ जावे तब प्रथम कमाई के माफिक इच्छा राखे वह मूर्ख, १६० अपने गुण का बखाण करे सो मूर्ख, १६१ कर्ज करके धर्म करे सो मूर्ख, १६२ उधार दिया हुआ धन न मांगे सो मूर्ख, १६३ अपने कुटुम्ब से विरोध और दूसरों से प्रीति करे सो मूर्ख, १६४ न्याय से धन उपार्जन करना, १६५ देश के विरुद्ध कोई कार्य न करना, १६६ राजा के दुश्मन के साथ संगति (सौबत) नहीं करनी, १६७ बहुत मनुष्यों के साथ विरोध न करना, १६८ अच्छे पड़ोसी के पास रहना, १६९ दूसरे का धर्म झूठा करना नहीं, १७० अपने पास रहनेवाले की

भलाई (हित) करना, १७१ बुरा लेख लिखना नहीं, १७२ देव, गुरु के विषय में भक्ति रखना, १७३ दीन और अतिथि की बने जबतक सेवा करनी, १७४ जो भाग्य में होगा वह मिलेगा ऐसा भरोसा करके उद्यम को छोडना नहीं, १७५ चोरी की वस्तु लेनी नहीं, १७६ अच्छी और बुरी वस्तु को भेली करके बेचना नहीं, १७७ आपत्ति काल निवारण करने के लिये राजा का आश्रय लेना, १७८ तपस्वी को, वैद्य को, मर्म को जाननेवाले को रसोई करनेवाले को मन्त्रवादी को, बड़े पूजनीय को इतनें को कोपाना नहीं, १७९ नीच की सेवा करनी नहीं, १८० विश्वासघात करना नहीं, १८१ सर्व वस्तु का नाश होता होवे तो भी अपनी वाणी का पालन अवश्य करना, १८२ धर्मशास्त्र जाननेवाले के पास बैठना, १८३ किसी की निन्दा नहीं करनी, १८४ मार्ग में चलते पान न खाना, १८५ आखी सुपारी को दांत से तोड़ना नहीं, १८६ अपनी बात कहे अपनी बात पर ही हसे, जैसा तैसा बोले और इस लोक और परलोक के विरुद्ध काम करे ये सब मूर्खों के चिह्न हैं, १८७ उपद्रव के स्थान पर रहना नहीं, १८८ आवक देख कर खर्च करना, १८९ द्रव्य के अनुसार वस्त्र पहनना, १९० लोक-निन्दित काम करना नहीं, १९१ खोटा तोल, खोटा माप रखना नहीं, १९२ जेवर अडानगत राख्या विना रुपया पैसा देना नहीं।

॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ सामायिक लेने की विधि ॥



प्रणम्य प्रणताशेषसुरासुरनरेश्वरम् ।

तत्त्वज्ञ तत्त्वदेष्टार महावीर जिनोत्तमम् ॥ १ ॥

श्रावक, श्राविका सामायिक लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर, चौकी(बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक और जपमाला(नवकारवाली) आदि रख कर, जमीन पूँज कर, आसन बिछा कर, चरवला और मुँहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुख के आगे रख कर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुवे पुस्तक आदि की स्थापना के सम्मुख कर के नवकारमन्त्र पढे।

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । ऐसो पच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं । पढम हवइ मगल ॥ १ ॥

(ऐसे एक नवकार गिन कर)

पचिदियसवरणो, तह नवविहवभचेरगुत्तिधरो। चउविहक-सायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं सजुत्तो ॥१॥ पच महव्वयजुत्तो, पचविहायार पालणसमत्थो, पचसमिओ तिगुत्तो छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥

(ऐसे पचिंदिय कहे, यदि प्रथम से आचार्य प्रमुख की उस स्थान पर स्थापना की हुई हो तो पचदिय नहीं कहना। (पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउ, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टी मक्कडासताणा सकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण सकामिया, जीवियाओ, ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण, कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहताणं भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुँ? " इच्छं "।

(ऐसे कह कर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक

सन्दिसाहुँ ? " इच्छं " । इच्छामि खमासमणो वंदिउ जाव-णिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदि-सह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? " इच्छं " ।

(ऐसे कह कर दोनों हाथ जोड़ कर एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरिआणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । ऐसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

(पीछे ' इच्छाकारि भगवन् ' पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ? ' ऐसे बोल कर ' करेमि भंते ' स्वयं उच्चरे, यदि गुरु या वडील हो तो उच्चरावे)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? " इच्छं " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? " इच्छं " इच्छामि खमासमणो

वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुँ ? " इच्छं " इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करु ? " इच्छं " ॥

(ऐसे कह कर हाथ जोड कर तीन नवकार गुणना)

॥ इति सामायिक विधि–लेने की सम्पूर्ण ॥

नोट—सामायिक में स्वाध्याय व नवकारवाली फेरना, विकथा को त्याग देना ।



अथ सामायिक पारने की विधि ।



इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्कमामि इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग,पणग दग मट्टी मक्कड़ा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिआ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया उद्दविया ठाणाओठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहि-
करणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण, निग्घायणट्ठाए,
ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण,
जंभाइएण उड्डुएण वायनिसग्गेण भमलिए, पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहि, सुहुमेहि खेलसचालेहि, सुहुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहिं अभग्गो अवि-
राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण, भगवताण,
नमुक्कारेण, न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण
अप्पाण वोसिरामि ।

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना,
काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना) ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते
कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअ च वदे,
सभवमभिणदण च सुमई च । पउमप्पह सुपास, जिण च
चदप्पह वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअलसिज्जसवा-
सुपुज्ज च । विमलमण त च जिण, धम्म सतिं च वदामि
॥३॥ कुथु अर च मल्लिं, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च । वदा-
मि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एव मए अभि-
थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा
तित्थयरामे पसियत ॥ ५ ॥

लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिअ पया सयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वदामि । इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? ।

(ऐसे कह कर मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिअ पारेमि ? ' यथाशक्ति ' इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिअ पारिअ ' तहत्ति ' ।

(ऐसे कह कर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रख कर, मस्तक झुका कर एक नवकार मत्र पढ कर ' सामायिअवयजुत्तो ' सूत्र पढे)—

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण , नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । ऐसो पच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं । पढम हवइ मगल ॥

समाइअ वयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसजुत्तो । छिन्नइ असुह कम्म, सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥ सामाइ

अभिउ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेण, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ मैंने समायिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमें जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कड ।

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के ये कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति सामायिक पारने की विधि समाप्त ॥



॥ अथ गुरुवंदन विधि ॥

गुरु महाराज के सामने खड़े हो कर पाचों अंगों (शिर १, हाथ २, पाव २) को नमाकर तीनवार " खमासमणा " देना ।

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(इतना कह कर खड़े हो कर गुरु सन्मुख दोनों हाथ जोड़ कर " इच्छकार सुहराइ " का पाठ कहना)

॥ अथ इच्छकार सुहराइ ॥

इच्छकार सुहराइ (देवसि) सुख तप शरीर निराबाध,

सुखसजम जात्रा निर्वहो छो जी, स्वामी शाता छे जी, भातपाणी का लाभ देजो जी।

(इतना कह कर गुरु के सामने खडे खडे ही 'अब्भुट्ठिओ' का पाठ पढ़ना)

॥ अथ " अब्भुट्ठिउ " ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइअ (दवसिअ) खामेउ इच्छ खामेमि राइय (देवसिय)

(इतना कह कर शिर झुका के दाहिना हाथ भूमि पर रख, बाया हाथ मुख के आगे रख कर घुटनों के बल बैठ निम्नलिखित पाठ पढ़ना)

ज किं चि अपत्तिय परपत्तिय भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलाव सलावे उच्चासणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए ज किं चि मज्झ विणयपरिहीण सुहुम वा बायर वा तुब्भे जाणह अह न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड।

॥ इति गुरुवदन विधि ॥



देवदर्शन विधि



श्री मदिरजी में देवदर्शन करने के लिये जाते समय सम्पूर्ण और स्वच्छ वस्त्र पहन कर उत्तरासन करके जाना चाहिये, क्योंकि प्रभु तो राजा और इन्द्रों से भी बडे हैं इस लिये उनके सामने जैसे तैसे (अशुद्ध) वस्त्रों समेत नहीं जाना चाहिये।

मदिर के पहले दरवाजे में प्रवेश करते ही पहिले निसिही (सासारिक सावद्य का छोडने रुप) करनी चाहिये। इस समय अपने घरबार के कामों का मनमे विचार न होना चाहिये परन्तु यदि मदिर का कोई काम हो तो उस पर ध्यान दे सकते हैं। और मदिर मे जहा कहीं कूड़ा कचरा जालीया दिखाई दे उसे भी यत्ना-पूर्वक दूर कर सकते हो।

जब प्रभु प्रतिमा दूर से ही नजर आने लग जाय तब दोनों हाथ जोडकर "नमो जिणाण" कहना चाहिये। फिर प्रभु की दाँई तरफ से उनकी तीन प्रदिक्षणा देनी चाहिये, जिससे हमारा ससारमे बार बार आना जाना कम हो और रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र) की प्राप्ति हो। अर्थात् अपने अन्दर श्रद्धा, विवेक और सदाचार प्रगट हो।

फिर जिस जगह भगवान विराजमान हो उनके बीच के द्वारपर (मूल गम्भारे के पास) पहुँच कर दूसरी 'निसिही' कहनी चाहिये, और प्रभु के सन्मुख खडा रहकर स्तुति करना।

अद्य मे सफल जन्म, अद्य मे सफला क्रिया,
अद्य मे सफल गात्र, जिनेन्द्र ! तव दर्शनात् ॥ १ ॥

छे प्रतिमा मनोहारिणी, दु खहरी श्री वीर जिणदनी,
भक्तोने छे सर्वदा सुखकारी, जाणे खीली चदनी ।
आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे,
पामी सघला सुख ते जगतमा, मुक्ति भणी जाय छे ॥१॥

जिनेश्वर भगवान की स्तुतियाँ कह भगवान का पूर्ण भाव से नमस्कार करना चाहिये। दूसरी निसिही करने से मंदिर सबधी कामकाज का त्याग होता है और दर्शन करने का काम आरम्भ होता है। दर्शन करते समय पुरुषों को प्रभु को दाई तरफ और स्त्रियों को बाई तरफ खडे होना चाहिये। और वहाँ मीठे स्वर और शान्तचित्त से श्लोक या दोह आदि बोलकर प्रभु का गुण कीर्तन करना चाहिये। (इस प्रकार स्तुति करने के बाद धूपपूजा करनी चाहिये)

---

१ यदि पूजा करने के लिये जाओ तो मूल गभारे में प्रवेश करते दूसरी निसिही कहकर पूजा का काम आरम्भ कर दो।

तत्पश्चात् चैत्यवदन करने के स्थान पर आकर उत्तरासग से भूमि को तीन बार पूजकर, बैठकर पाट पर स्वच्छ अखड चावलों से सुदर साथिया करना चाहिये। पहिले तीन डेरियाँ करनी चाहियें और उसके नीचे साथिया करना चाहिये। और उसके उपर सिद्धशिला तथा सिद्ध-स्थान बनाने चाहिये। जैसेः—



साथिया और सिद्ध स्थान पर नैवेद्य (पताशे, पेडे आदि) तथा फल (सुपारी, नारियल आदि) चढ़ाने चाहिये। नैवद्य और फल अच्छे होने चाहिये। क्योंकि भगवान के आगे जो कुछ भी चढ़ाया जाय वह सब शुद्ध और अच्छी वस्तु होनी चाहिये। साथिया करके उस पर दृष्टि रख कर दोनों हाथ जोड़ कर प्रभु से यह प्रार्थना करनी चाहिये। " हे प्रभो! ज्ञान दर्शन और चारित्ररूप यह तीन रत्न दे कर और देव, मनुष्य, तिर्यंच और नरक इन चार गतियों से छुड़ा कर मुझे ऐसी शक्ति दीजिये जिस से मैं सिद्ध स्थान को प्राप्त कर सकु " पूजा करनेवाला पूजा कर के पीछे उपरोक्त विधि करे और चैत्यवदन करें। फिर तीसरी " निसिही " कह कर एक खमासमण दे कर इरियावहिय

से प्रकट लोगस्स तक कहे। बाद में तीन खमासमण देकर चैत्यवदन करना चाहिये। इस निसिही से दर्शन अथवा पूजा करने के काम का त्याग होता है और चैत्यवदन का आरम्भ होता है और सो नीचे प्रमाणे।

इच्छाकारण सदिसह भगवन्! चैत्यवदन करु इच्छ,

(श्री आदिनाथ प्रभु का चैत्यवदन)

आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय,
नाभिराय कुलमडणो, मरुदेवा माय १
पाँच स धनुपनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चौरासी लख पूर्वनु जस आयु विशाल. २
वृषभ लछन जिन वृषभ धरू ए, उत्तम गुण मणिखान,
तस पद पद्म सेवनथकी, लहिए अविचल ठाण ३

इस के बाद,

ज किंचि, नामतित्थ, सग्गे पायाले माणुस लोए।
जाइ जिणबिंबाई, ताई सबाइ वदामि ॥ १ ॥

॥ अथ नमुत्थण (शक्रस्तव)

नमुत्थुण अरिहताण भगवताण, आइगराण तित्थयराण सयस बुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण पुरिसवरपुडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहिआण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण

॥ ४ ॥ अभयदयाण चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाण बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण धम्मदेसयाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीण ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण, दसणधराण विअट्टछउमाण ॥ ७ ॥ जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण । बुद्धाण बोहयाण मुत्ताण मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले । सपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

॥ जावति चेइआइ सूत्र ॥

जावति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइ ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥

(यह पाठ पढने के बाद एक खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ (फिर)

॥ जावत केवि साहू सूत्र ॥

जावत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदडविरयाण ॥

॥ पचपरमेष्ठि नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

श्री आदिनाथ जिन स्तवन ॥

(मधुर स्वर में स्तवन कहना)

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी,
प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारी ॥ज०॥१॥
वरसीदान दय तुम जग म इलर्ता इति निवारी,
तैसी काही करतु नाही करुना, साहिब मेहर हमारी ॥ज०॥२॥
मागत हम नही हाथी घोड़े, धन कन कंचन नारी,
दीयो मोही चरनकमल की सेवा, याहि लगत मोही प्यारी ज०३
भव लीला वासितसुर डारे, तु पर सब ही उवारी,
मैं मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आज्ञा शिर धारी ॥ज०॥४॥
एसो साहिब नही कोइ जग मे, यासु होय दिलदारी,
दिल ही दलाल प्रेम के बिचे, तिहा हठ खींचे गमारी ॥ज०॥५॥
तुम ही साहिब मे हू बंदा, या मत दाचो विसारी,
श्री नयविजय विबुध सेवक के, तुम हो परम उपकारी ॥ज०६॥

(पिछे दोनो हाथ जोड़ कर मस्तक पर लगा कर सम्पूर्ण जय वीयराय कहना)

जय वीयराय जगगुरु! होउ मम तुह पभावओ भयव।
भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरण च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

वारिज्जइ जइवि नियाण–बंधण वीयराय ! तुह समए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

दुक्खखओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

(पिछे खड़े हो कर अरिहंतचेईयाणं कहना)

अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डूएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठीसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

---

१ आभवमखंडा कहे पिछे हाथ जरा नीचे उतारना

एक नवकार का काउस्सग्ग करना, एक नवकार का काउस्सग्ग पार के ऐसा बोलना,

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(यह कह कर स्तुति करना)

श्री आदिनाथ जिन स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जगतस्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरि राया, मोक्ष नगर सिधाया॥

फिर खमासमण देकर, पीछे यथाशक्ति पच्चक्खाण करना नवकारसी। और भगवान के सामने खड़े हो मांगलिक स्तुति करना।

जैनाचार्य श्री विजयअमृतसूरिविरचित आत्मनिन्दा द्वात्रिंशिका उद्धृत,

संसाररूप भवाटवीमां सार्थवाह प्रभु तमे,
मुक्तिपुरी आववानी इच्छा अतिशय छे मने,
आश्रय कर्यो तेथी प्रभो तुम तोय अन्तर सञ्चरो,
शुभ रत्नत्रय रूप विभो! रक्षा करो रक्षा करो ॥१॥
पधारे प्रभो निज देहमां पण आप बुद्धिन तजी,
श्रद्धानले शुद्धि करल विवेकन विना सज्ञ:

समशत्रु मित्र विषे बनी न्यारो थई परभावथी,
रमीश सुखकर सपमें क्यारे प्रभो आनन्दथी ॥२॥

गतदोष गुणभंडार जिनजी देव म्हारे तुज छे,
सुरनर सभामा वर्णव्यो जे धर्म म्हारे तेज छे,
एम जाणीने पण दासनी मत आप गजगणना करो,
आ नम्र म्हारी प्रार्थना स्वामी तमे चित्ते धरो ॥३॥

प्रतिमा विचार.

" स्वान्तध्वान्तमय मुख विषमय दग्धूम्रधारामयी ।
तेषा येर्न नता स्तुता न भगवन्, मूर्तिर्न वा प्रेक्षिता ॥"

अर्थ —श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी महाराज फरमाते है कि-जिसने भगवान् की मूर्ति को नमस्कार किया नहीं, उसका हृदय अधकारमय है, जिसने स्तुति की नहीं, उसका मुख जहरवाला है, जिसने उनका दर्शन किया नहीं उसकी नजर धुंआ से भरी हुई है ।

प्रभु दर्शन यह धर्मक्रिया है, तथा आत्मोन्नति का अमोघ शस्त्र है । जितनी क्रिया करे वह धर्मपूर्वक करे, तथा इस प्रकार की क्रियाओं को धर्मक्रिया कहते हैं । इन धर्मक्रियाओं मे प्रभुदर्शन उत्तम क्रिया है, जहाँ क्रिया है वहाँ फल है । उदासीनभावसे भगवान् के स्वरूप चिंतन की दशा प्राप्त कर लेनेके बाद यदि

परमात्मा बनता है याने मोक्ष मिलता है। चैत्य शब्द का अर्थ —

> चैत्यवन्दनतः सम्यक् शुभो भावः प्रजायते ।
> तस्मात्कर्मक्षयः सर्वं ततः कल्याणमश्नुते ॥

अर्थ —भली प्रकार चैत्य(प्रभु)वंदन करने से शुभ भावनाऐं पैदा होती हैं उससे (शुभभावनाओं से) सर्वथा कर्म का नाश होता है, और कल्याण (मोक्ष) मिलता है।

चैत्य शब्द का अर्थ-लोक में जिनबिंब अथवा जिन मंदिर होता है, परन्तु तो भी कई एक मनुष्य इसका अर्थ ज्ञान, मुनि और वन ऐसा करते हैं। व्याकरण में चित् धातु का अर्थ संज्ञा उत्पन्न करना (ऐसा) होता है। उसी पर से "चैत्य" शब्द बना है। जैसे लकड़ी आदि में प्रतिमा देखकर, यह अरिहंत की प्रतिमा है ऐसा भाव पैदा होता है। धातुपाठ में "चिच" धातु से चैत्य बतलाया गया है। कोष आदि शब्द शास्त्र में भी आप यही "चित्" धातु से चैत्य शब्द पाया जाता है। नाममाला ग्रन्थ में "चैत्य विहारे जिनसद्मनि" चैत्य शब्द विहार और जिनालय के लिए उपयोग में आता है। अमरकोश में भी "चैत्यमाय तन प्रोक्त" याने चैत्य शब्द का अर्थ सिद्धायतन, जिन-मंदिर ऐसा कहा है। कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य महाराज स्वयं अपनी बनायी हुई पुस्तक "अनेकार्थसंग्रह" में

" चैत्य जिनौक तद् बिंब चैत्यमुद्देश पादपः । " चैत्य याने जिनमंदिर, जिनबिंब और वह वृक्ष कि जिसके नीचे तीर्थंकर भगवान् को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है, इस तरह तीन अर्थ होते हैं, और आगमादि में भी यही अर्थ स्पष्ट-रूप से बतलाया गया है ।

आगमोक्त प्रतिमा ।

आगमादि में भी बहुत से चैत्य और जिनप्रतिमा के लिये प्रमाण मौजूद है, जैसे—स्थानांगसूत्र ४, स्थानाध्ययन उद्देश २, सूत्र ३०७, समवायांग सूत्र ३५, भगवती सूत्र शतक ३, उद्देश २, सूत्र १४२ भगवती शतक ३, उद्देश २ सूत्र १४४, उपासकदशांग अध्ययन ७ सूत्र २, महाकल्प सूत्र, महानिशिथ अ ३, उववाइ सूत्र १,–४०, रायपसेणी सूत्र १३९, उत्तराध्ययन निशिथ अ० १०, गाथा २९१ इत्यादि बहुत से आगम सूत्र में प्रमाण मौजुद हैं। और बत्तीस सूत्र में भी जिन प्रतिमा का प्रमाण मौजुद है, इस लिये जो महानुभाव जिनप्रतिमा का निषेध करते हैं, उन्हीं को कदाग्रह को छोड करके जिनप्रतिमा का निषेध नहीं करना चाहिये, और मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास में प्रः ३९ से ११६ प्रकरण को पढने की कोशिश करे और दुराग्रह छोड़े और बत्तीस सूत्र मूल माननेवाले निर्युक्ति, भाष्य आदि को नहीं मानते हैं और जिन बत्

कर्मी होता और जिनपूजादि क्रिया से हलुकर्मी होता है उस वास्ते धर्मक्रिया हमेशा करनी, और उसमें भी वो क्रिया अपनी सर्व शक्ति से विधिपूर्वक करने का यत्न करना। शास्त्र में कहा है कि-" विधियोग को धन्य है, और उसके आराधक को भी धन्य है, तथा विधि का सन्मान करनेवाले को धन्य है, और विधि पक्ष को दूषण नहीं लगानेवाले को धन्य है।" यह सब विदित है कि संसारिक कार्यों जैसे व्यवहार करना, भोजन करना, खेती करना, औषधी(दवाई)खाना आदि विधिपूर्वक करने से अच्छा फल मिलता है, तो फिर अरिहंत भगवान की अपने महर्षियों प्रणीत शास्त्रानुसार पूजा करने से पूजा करने से अवश्य उत्तम फल मिले, इसमें कौनसा आश्चर्य है? जैसे सूर्याभदेव, रावण, द्रौपदी आदिने प्रभुपूजा की है यह शास्त्र सिद्ध है।

जो भणइ नत्थि धम्मो न चेव न जगाइ।
सो समणसंघबज्झो कायव्वो समणसंघेण ॥ १ ॥

जिन चैत्यवंदन

जैनाचार्यश्री विजयनन्दनसूरि विरचित।

भव्यानामिह भक्तिसक्तमनसा श्रेयो निधानं वरम्।
काम कल्पितकामनाविकिरणे साक्षाद्धि कल्पद्रुमम् ॥
श्रीशत्रुंजयमुरूपशृङ्गमदृश कालुष्यनिर्णाशनाम्।
श्री कादम्बकतीर्थराजमनीशं ध्यायामि सन्मङ्गलम् ॥ १ ॥

सम्प्राप्तो जिनसम्प्रतेर्गतचतुर्विंशस्य यत्राचले ।
निर्वाण मुनिकोटिभि र्गणधरः श्रीमत्कदम्बाभिधः ॥
श्रद्धाराधनतत्परैकमनसा योऽचिन्त्यचिन्तामणिः ।
श्रीकादम्बगिरिः शिव सतनुता प्रौढप्रभावान्वित' ॥ २ ॥

छाया वृक्ष सुरद्रुमाश्च निधयः सद्रत्नभूमिस्तथा ।
प्रच्छन्नारसकूपिकाः सुवहवो दिव्यौषधीना व्रजाः ॥
यस्मिश्चाखिलसिद्धयोऽपि सतत खेलन्ति तीर्थाचले ।
सोऽय सिद्धिनिकेतन निजयते कादम्बकस्तीर्थराट् ॥ ३ ॥

आदीश्वर भगवन् का स्तवन

माता मरूदेवीना नद !
देखी ताहरी मूरति मारू मन लोभाणु[illegible]
करूणानागर करूणासागर, काया कचन वान,
धोरी लछन पाउले काई, धनुप पाचसें मान-[illegible] १
त्रिगडे वेसी धर्म कहता, सुणे पर्षदा बार;
योजनगामिनी वाणी मीठी, वरसती जल[illegible] २
उरवशी रुडी अपछरा ने, रामा छे मन[illegible]
पाये नेउर रणझणे काई, करती [illegible] ३
तुहि ब्रह्मा तुहि विधाता, तु जग तार[illegible]
तुज सरिखो नही देव जगतमा, अहनिश [illegible]

तुंहि भ्राता तुहि त्राता, तुहि जगतनो देव,
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव–माता० ५
श्री सिद्धारथ तीरथकेरो, राजा ऋषभ जिणद,
कीर्ति कर माणेकमुनि ताहरी, टालो भव भय फंद–माता० ६

श्री महावीरस्वामिनी स्तुति

जय जय भवि हितकर वीर जिनेश्वर देव,
सुरनरनायक जेहनी सारे सेव।
करुणा रस कंदो वंदो आनंद आणी,
त्रिशलासुत सुंदर गुण मणिकेरो खाणी ॥ १ ॥



सूतक विचार।

१ पुत्र का जन्म हो तो १० दिन का व पुत्री का जन्म हो तो ११ दिन का और रात्रि को जन्म हो तो १२ दिन का सूतक

२ बारह दिन तक घर के मनुष्यों को देवपूजन नहीं करना

३ अगर जुदा भोजन करते होवें तो दूसरे के घर पानी से जिनपूजा कर सकते हैं और सुवावड करनेवाली या करानेवाली को तो नवकार मंत्र भी नहीं गिनना।

४ प्रसव करनेवाली स्त्री को १ मास तक जिनप्रतिमा के दर्शन नहीं करना और ४० दिन तक जिनप्रतिमा को पूजन नहीं करना और मुनिगणों को आहार भी न देना।

५ घर के गोत्री को ५ दिन तक सूतक।

६ व्यवहार भाष्य की मलयगिरिकृत टीका में जन्म का सूतक १० दिन का है।

७ गाय, घोडी, उटणी, भेंस घर मे प्रसवे तो २ दिन का और जगल मे प्रसवे तो १ दिन का सूतक।

८ भेंस प्रसवे तो १५ दिन, गाय प्रसवे तो १० दिन, बकरी प्रसवे तो ८ दिन, उंटणी प्रसवे तो १० दिन के बाद दुध काम मे लाना।

९ दास दासी का जिनका अपने ही आश्रय में जन्म हो और अपने सामने रहे हो तो २४ प्रहर का सूतक समझना।

ऋतुवती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार ॥

१ दिन ३ तक बर्तन आदि न छुए, ४ दिन तक प्रतिक्रमणादि न करे परन्तु तपस्या करे तो सार्थक हो सकती है। पाच दिन बाद जिनपूजा करना। रोगादि कारणो से ३ दिन व्यतीत होने बाद रुधिर देखने मे आवे तो उसका दोष नहीं। विवेक सहित पवित्र हो कर जिनप्रतिमा के दर्शन, अग्रपूजादि करे और साधुओं को वन्दना करे परन्तु जिनप्रतिमा की अगपूजा न करे।

मृत्यु सम्बन्धी सूतक का विचार ॥

१ घर का कोई मनुष्य मर गया हो तो १२ दिन

सूतक, उसके घर साधुओं को आहार नहीं लेना, उसके घर की अग्नि व जल से जिनपूजा नहीं करनी।

२ मृतक के पास सोनेवाले को ३ दिन पूजा नहीं करना

३ कधा लगानेवाले को देव, दर्शन व प्रतिक्रमणादि ३ दिन तक नहीं करना।

४ मृतक को छुए हुए तो स्नान करने से शुद्ध हो सक्ते हैं

५ अन्य पुरुष जो मृतक को छुए हो तो सोलह प्रहर तक प्रतिक्रमणादि न करना।

६ जिनके घर जन्म और मृत्यु का सूतक हो उनके घर भोजन करनेवाले को १२ दिन तक जिनपूजन नहीं करना

७ कपड़े बदलनेवाले ८ प्रहर तक सूतक पाले।

८ जन्म के दिवस ही मर जाय या विदेश मे मर जाय अथवा साधु काल धर्म पावे तो स्नान करने से शुद्ध होता है

९ आठ वर्ष से कम उम्र का बालक मर जाय ८ दिन का सूतक।

१० गाय आदि की मृत्यु हो तो घर से बाहर जाने के बाद १ दिन तक सूतक और अन्य तिर्यंच कलेवर घर में पड़ा हो तो उसे बाहर ले जाय वहाँ तक सूतक, बाद मे नहीं।

११ दास दासी जो अपने आश्रय मे और घर मे रहे हो ओर उनको मृत्यु और जन्म हो जाय तो ३ दिन का सुतक।

१२ जितने मास का गर्भ गिरे उतने दिन का सुतक।

१३ विदेश गये हुए की मृत्यु सुने तो १ या २ दिन का सुतक।

गोमूत्र मे २४ प्रहर, भेंस मूत्र मे १६ प्रहर, गाडर गधेडी व घोड़ी के मूत्र मे ८ प्रहर और नर नारी के मूत्र मे अन्तर्मुहूर्त पिछे सन्मूर्छिम जीव पैदा होते हैं।

इति सुतक विचार।

अस्वाध्याय दिवस।

ऋतुवती स्त्री के तीन दिवस तक अस्वाध्याय, पिछे से गले तो वो ऋतु सम्बन्धी न हो परन्तु वो लोही फेरफार वर्णवालु होने से स्वाध्याय करना कल्पता है।

पुत्र जन्मे तो ७ दिवस तक अस्वाध्याय, और पुत्री जन्म तो वह लोहीवाली होने से ८ दिवस तक अस्वाध्याय।



---

१ निशीथ सूत्र के सोलह्वा उद्देशा मे जन्म मरण सूतक का घर दुर्गंधनिक कहा है।

जाकर के गुरु महाराज का व्याख्यान सुनना नहीं तो दिवस में एक वरत भगतिक भी सुनना और दान देना।

९ प्रश्न–अभक्ष्य किसको कहते हैं?

उत्तर–न खाने योग्य चीजों को अभक्ष्य कहते हैं। यह मक्खन, आदि बावीश प्रकार के हैं।

१० प्रश्न–विदल किसको को कहते हैं?

उत्तर–जिस अन्न की दो दाल (द्विदल) हो जाय, और जिसमें से तेल नहीं निकले उस अन्न को कच्चे दूध, दहीं, छाछ के साथ अथवा मिलाय के खाना बड़ा दोष कहा है, दहीं वगैरह खूब गरम करके साथ खाने में विदल का दोष नहीं है।

नोट–बत्तीस प्रकार के अनन्त काय, और बावीस प्रकार के अभक्ष्य श्रावक को त्याग करना चाहिये, जो जीव कन्द-मूल खाते हैं वो जीव पापसे भारी होकर भवभव में बहुत दु'ख पाते हैं इसी कारण श्रावक को त्याग करना उचित है।

सर्वसिद्धिमंत्र।

ॐ अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू, सव्व-धम्मतित्थयराण, ॐ नमो भगवइए, सुयदेवयाए, सतिदेव-याण सव्वपवयणदेवाण, पञ्च लोगपालाण, ॐ ह्रीं अरि-हन्तदेव नम।

विधि—इस मंत्र को सिद्ध करने के लिये देवस्थान या किसी और जगह शुद्ध देख कर बैठना चाहिए, सर्व सिद्धि का भंडार है। कठिन कार्य के समय विधि सहित जाप करने से कष्ट मिटता है, और सात बार मंत्र बोलकर वस्त्र के गाँठ लगाता जाय तो तत्काल चमत्कार बताता है। व्याघ्रादि हिंसक प्राणी या अन्य प्रकार का भय उपस्थित हुआ हो तो नष्ट होजाता है।

श्रीप्राप्ति महाविद्या।

"तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु" ऐसा कहकर बादमे "ॐ ह्रीँ बीयबुद्धिण, ॐ ह्रीँ कुट्ठबुद्धिण, ॐ ह्रीँ संभिन्न सोयाण ॐ ह्रीँ अक्खीणमहाणसलद्धिण सव्वलद्धिण नमः स्वाहा।"

विधि—इस महाविद्या मंत्र की सिद्धि के लिए—अट्ठम, याने तीन दिन तक उपवास मे रहकर साढ़ा बारह हजार बार जाप करना चाहिए। यदि उपवास न बन सके तो दूध, शक्कर, घी, चावल और रोटी एक बार खाकर, गर्म पानी पीवे। इस मंत्र का जाप करते समय पीला वस्त्र, पीला आसन तथा पीली माला रखनी चाहिए। साढ़ा बारह हजार बार जाप करलेने पर, बाद मे हमेशा १०८ बार जाप करना, जिस से धन-सम्पत्ति और पुत्र-परिवार तथा अच्छी आजीविका मिलती रहे।

सरस्वती महाविद्या ।

" तीर्थंकर गणधर प्रसादात् एष योगः फलतु " ऐसा कहकर फिर " ॐ ह्रीं चउदसपुविण, ॐ ह्रीं पयाणुसारिण, ॐ ह्रीं एगारसगधारिण, ॐ ह्रीं उज्जुमइण, ॐ ह्रीं विपुल-मइण स्वाहा ।"

विधि—इस मत्र का जाप हमेशा ७ महिने तक १०८ वार जाप करते रहना चाहिए, जिससे बुद्धि तीव्र होवे, याद्दशक्ति बढ़े, जैसी २ विद्या सिखने की इच्छा करे वे बहुत जल्दी प्राप्त होवे, तथा सभा मे व्याख्यान देने की शक्ति बढ़ जावे ।

रोगक्षय मत्र ।

ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण, ॐ नमो खेलोसहिपत्ताण ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताण, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण स्वाहा

विधि—इस मत्र के जाप से रोगपीड़ा मिटती है व्याधि दिन दिन कम होगी, एक माला सवेरे ही फेरना चाहिए ।

भूत-प्रेत निवारण मत्र ।

" श्री माणिभद्र देवप्रसादात् एष योगः फलतु " ऐसा कहकर "ॐ नमो भगवते माणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्ण रूपाय, चतुर्भुजाय, जिनशासनभक्ताय, नवनागसहस्रबला

किन्नर-किंपुरुष-गंधर्व-यक्षराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-सर्व-शाकिनीनां निग्रह कुरु कुरु स्वाहा, पात्र रक्ष रक्ष स्वाहा।"

विधि—धूप दीप सहित (रखकर) इस मंत्र को साढ़े बारह हजार बार जाप करने से सिद्ध होता है। मंत्रसिद्धि समय ब्रह्मचर्य पालन करना, भूमि पर सोना, एक वक्त भोजन करना, सत्य वचन बोलना, तथा शुद्ध आचार रखना चाहिए। बाद में जरूरत पड़ने पर १०८ बार जल को मंत्र-कर पीलाने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी आदि का कष्ट दूर हट जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतम मम व्यवसाये ऋद्धि सिद्धि कुरु २ स्वाहा। १०८ बार प्रतिदिन गुणीए। लक्ष्मी दासी के समान वश होय और सुख-संपत्ति मळे।



नमो नम श्रीगुरुनेमिसूरये ॥

आचार्यविजयामृतसूरिविरचित

अथ श्री वैराग्यशतकम् ।



(सवैया—घर गया ने वर गया—ए राग)

श्री आदीश्वर शान्ति जिनेश्वर नेमि प्रभु ने पाम जिणन्द,
वीर प्रभु ए पाच प्रभुने छठ्ठा श्रीगुरु नेमिसूरीन्द ।
ए सर्वने प्रणये प्रणमी समरी सरस्वती मात उदार,
रचु 'वैराग्यशतक' आ सुख कर प्राचीन उक्तिने अनुसार ॥१॥

बहु काले बहुविध दुःख महता धर्मक्रिया करवानो काल,
नरभवरूप प्राप्त थयो छे पुण्य प्रचयथी चेतन हाल ।
अल्पकाल स्थायी सुखदायी सुर समकिती जेहने चहाय,
दश दृष्टान्ते दुर्लभ एने हारी जईने जन पस्ताय ॥ २ ॥

[मनुष्यभवनी दुर्लभता]

भरतक्षेत्रमा घर घर भोजन ब्राह्मणने आपे चक्रीश,
चौसठ सहस अन्तेउरी जस नरपति सेवे सहस बत्रीश ।
दैवयोगथी एक घर ते बीजी वख्ते जमवा जाय,
पण सुकृत विण गत नरभव ते पाछो चेतन नहिज पमाय ॥३॥

भरतक्षेत्रना सर्व धान्यनी देवे कीधी ढगली एक,
तेमा पाली सरसव नांखी लाव्यो डोशी वृद्ध ज छेक ।
ते वृद्धाथी कदाच सरसव सर्व धान्यथी भिन्न कराय ॥पण०॥४॥
देवी द्यूतकलाथी जिती श्रीमतोने वारवार,
जे चाणक्ये चन्द्रगुप्त नृपनो भरपूर भर्यो भण्डार ।
मानी ले के ते सर्वी ते वणिक जनोथी पण जीताय ॥पण०॥५॥
एक हजार ने आठ स्तम्भनी शाला स्तभे स्तम्भे हाम,
अष्टोत्तर शत हार्या विण ते सर्व जीतवा नृपनी पास ।
ए घटनाथी जीती जनकने राजपुत्र पण राजा थाय ॥पण०॥६॥
दूर देशनागी वणिकोने श्रेष्ठिसुतोए आप्या रत्न,
पितृवचनथी पश्चात्तापे तेज रत्न मेलववा यत्न ।
करता कोई दिन सर्व रत्नथी जनक हृदय पण सतोषाय ।पण०।७।
पूर्ण शशीने स्वप्ने देखी राजपुत्र ने रक विशेष,
निवेक विकल लहे रक क्षीरने नृपसुत पाम्यो राज्य विशेष ।
एज मटे सुता स्वप्नमा तेने पूर्णेन्दु य जणाय ॥पण०॥८॥
राधाना मुख नीचे चक्रो सवला अवला फरता चार,
तैल कटाहीमा प्रतिबिम्ब निरखता ऊभो राजकुमार ।
ते राधानु वाम नेत्र ते चपल तीरथी पण वींधाय ॥पण०॥९॥
कच्छप देखी पूर्ण चन्द्रने द्रहमा दूर थये सेवाल,
आनदे ए जोणु जोवा लइने आव्यो निज परिवार ।
मली गये सेवाल सुधाकर कच्छपथी य कदी निरखाय॥पण०॥१०

पूर्वे पयोधिमाहे समोलने योंसरी पश्चिम जलधिमाय,
दुर्धर कल्लोले खेंचता कोईक समये मेगा थाय,
चली समोल स्वय ए युगना विवर विषे पण पेसी जाय ॥पण०॥
कोई कुतुहली देवमणिमय स्तभनु चूर्ण करीने जाय,
मेरुशिरे ए चण नलीमां नाखी सर्व दिशा विखराय ।
ए अणुओने वीणी वीणी दवे पाछो स्तम कराय ॥पण०॥१२॥
ऊगे सूरज पश्चिममा ने पूर्व दिशामा अस्त ज थाय,
सागर मर्यादा मूके ने सिंह कदी खडने पण खाय ।
चन्द्रथकी अंगार झरेने वासीद मारेलु जाय ॥ पण० ॥१३॥
(वैराग्यशतक से उद्धृत)

सज्झाय।

महजानदी रे आतमा, सूतो काइ निश्चित रे,
मोहतणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवत रे,
लूटे जगतना तत रे, नाखी वाक अत्यत रे,
नरकावास ठवत रे, कोई वीरला उगरत रे ॥ म० ॥ १ ॥
रागद्वेष परिणती भमी, माया कपट कराय रे,
काशकुसुम परे जीवडो, फोगट जनम गमाय रे,
माथे भय जमराय रे, शो मन गर्वे धराय रे,
सहु एक मार्ग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥म०॥२॥
रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे,
दश माथा रण रडवड्या, चाच दिये शिर काग रे,

देव गया सवि भाग रे, न रह्यो माननो छाग रे,
हरि हाथे हरि नाग रे, जोज्यो भाईयोंना राग रे ॥स०॥३॥
केई चाल्या केई चालशे, केता चालणहार रे,
मारग रहेतो रे नित्य प्रत्ये, जाता लख हजार रे;
देश विदेश सुधार रे, ते नर एणे ससार रे,
जोता जम दरबार रे, न जुवो वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥
नारायणपुरी द्वारिका, बलती मेली निराश रे,
रोता रणमा एकला, नाठा देव आकाश रे,
किहा तरु छाया आवास रे, जल जल करी गयो साम रे,
बलभद्र सरोवर पास रे, सुणी पाण्डव खिन वास रे ॥स०॥५॥
राजी गाजी रे बोलता, करता हुकम हेरान रे,
पोढ्या अग्निमा एकला, काया राख समान रे,
ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे,
जेवु पीपल पान रे, मघगे झूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥
वालेसर विना एक घडी, नवि सोहातु लगार रे,
ते विण जनमारो वही गयो, नही कागल समाचार रे,
नहीं कोई कोईनो ससार रे, स्वारथीयो परिवार रे,
माता मरुदेवी सार रे, पहोंत्या मोक्ष मोझार रे ॥स०॥७॥
मातापिता सुत बाधवा, अधिको राग विचार रे,
नारी अमारी रे चित्तमा, वछे विषय गमार रे,
जुओ सूरिकता जे नार रे, विष दीधो भरतार रे,
नृप जिम धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ सहजा० ॥९॥

हसी हसी देता रे तालीओ, सन्ध्या कुसुमनी सार रे,
ते नर अते मार्टी थया, लोक चणे घरबार रे,
घडता पात्र कुमार रे, एहतु जाणी असार रे,
छोडो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥सहजा०॥१०॥

थावच्चा सुत परिवर्या, वली एलायची कुमार रे,
धिग् धिग् विषया रे जीवने, लई वैराग्य रसाल रे,
मेली मोह जजाल र, घेर रमे केवल बाल रे,
धन्य करकडु भूपाल र ॥ सहजा० ॥ १० ॥

श्री "शुभविजय" सुगुरु लही, धर्मरयण धरो छेक रे,
धीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक र,
न गमे ने नर भेक र, धरता धर्मनो टेक रे,
भवजल तरिया अनेक रे ॥ सहजा० ॥ ११ ॥

शिखामणनी सज्झाय ।

नरभावासमा चितवे रे, हवे न करशु म पाप,
जब जायो तब विसर्यो रे, माड्यो माड्यो घणा रे सताप के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ।
तु तो परभव केओ लही शके, सुण रे चचल जीवड़ा रे॥ए टेक॥१॥

जो नवकार गणावीए तो नयणे निंद भराय,
नाटक चेटक निरखता तो जाय जाय रमणी विहाय के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ २ ॥

जो सामायक कराविये तो, लागे वार अपार,
वातो साथे जो मिले तो, करे करे पहोर बे चार के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ३ ॥

ऊभे काउस्सग्ग करावीए तो, कहे दुःखे मोरा पाय,
माथ पोटक मूकीए तो, दोड्यो दोड्यो मारग जाय के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ४ ॥

जो उपवास करावीए तो, लागे भूख अपार,
लेणा कारण रोकीए तो, लाधे लाधे दो दिन चार के,
सुण र चचल जीवड़ा रे ॥ ५ ॥

धर्मने कामे मागीए तो, एक बदाम न दय,
राजक दैनक रोकी ल्ये तो, खूणे बेसी गणी देय के,
सुण र चचल जीवड़ा रे ॥ ६ ॥

लोभने वश थई प्राणीयो रे, मेले धणे री रे आथ,
दान सुपात्रे देयता तो, थर थर धुजे छे हाथ के;
सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥ ७ ॥

त्रण तत्त्व आराधीये तो, जपीये श्री नवकार,
श्रीमानिजय गुण आणीये तो, पहोंते मुक्ति मज्झार के,
सुण रे चचल जीवड़ा रे ।
तु तो परभव केशो लहीश के, सुण रे चचल जीवड़ा रे ॥८॥

श्री कलियुगनी सज्झाय ।

सरस्वती स्वामिनी पाय नमीने, उलट मनमांहे आयो,
तीरथ नहि कोई इण समारे, तेणे ए कलियुग आयो,
देखो वेचारो कुडो कलियुग आयो ॥ ए आंकणी ॥

बापो कहे म्हारी न्हानड़ी बेटी, दिन २ मूल्य मचायो,
वेचारो कलियुग आयो ॥ १ ॥

राजा तो परजाने पीडे, कुंवर काम भलायो,
बोल बंध नहीं मानीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ वे० ॥ २ ॥

गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पुराण पढायो,
मातु चूले ने नहु खाटलडे, फूके शरीर जलायो ॥ वे० ॥३॥

अेंशी वर्षनो डोंड होशे, मूंछे हाथ घलायो,
पचवर्णी साखी परणीने, अबला अर्थ गमायो ॥ वे० ॥४॥

जोगी जगम ने सन्यासी भाग भरे मद व्हायो,
चोर चाड परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ वे० ॥५॥

निर्धनने नहु बेटा बेटी, धनवंत एक न पायो,
नीच तणे घर अति घणी लक्ष्मी, उत्तम जन सीदायो ॥वे० ॥६॥

न मले बाप सधाथ बेटो, घणे र मनोरथे जायो,
हाथ उपाडे मायने मारे, परणी शु उमाह्यो ॥ वे० ॥ ७ ॥

घरड़ाने घेलो कहे बेटो, आपतणो मद वाह्यो,
वहू सुती ने वर हींडोले, सासरे सुवाने धरायो ॥ वे० ॥८॥

हल खेडे ब्राह्मण गो जुत्ति, निर्दय नाक फडायो,
मा बापे बेटी वेचीने, बेटाने परणायो ॥ बे० ॥ ९ ॥
रागतणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे पराया,
कागानी परे कलहो माडी, कुलगुरु नाम धराया ॥बे०॥१०॥
वैयर वार घरमनी बेटो, दीठो गोद खेलायो,
माग्या मेह न वरसे महीयल, लोमे घरुयो सवायो ॥११॥
कूडा कलियुग ए माया, देरी गीत गवायो;
पभणे "प्रीतनिमल" परमारथ, जिनरचने सुख पायो ॥१२॥

जम्बूकुमार की सज्झाय ॥

सरस्वती स्वामिनीने विनवु-सतगुरू लागुजी पाय,
गुणरे गाशु जबूस्वामीना, हरख धरी मन मॉय,
धन धन जम्बूस्वामिने ॥ १ ॥
चारित्र छे वच्छ दोही(लु), व्रत छे खाडानी धार,
पाये अणवणेजी चालवुं, करवाजी उग्र विहार ॥धन॥२॥
मध्यान (पठी) करवी गोचरी, दिनकर तपे ललाट,
वेलु कवलसम कोलीया, ते किम वालिया जाय रे ॥धन॥३॥
कोडी नवाणु सोवनतणी, तमारे छे आठे जीनार,
ससारतणा सुख सुण्या नहीं, मोगवो भोग उदार ॥धन॥४॥
राम-सीता वियोगडो, वहोत किया रे सग्राम,
छती रे नारी तुमे काई तजो, तजो घनधाम ॥धन॥५॥

परणीने शु परिहरो, हाथ मल्यानो सबंध,
पछी त करशो स्वामी ओरतो, जेम कीधो मघ मुनिंद्र ।धन।६।
जंबू कहे नारी सुणो, अम मन संयम मार;
साचो स्नेह करी लेखवो, तो संयम ल्यो अम साथ ।।धन।।७।।
तेणे समये प्रभवोजी आव्यो, पाचशे चोर संघात,
तेणे पण जंबूस्वामी ए बुझव्यो,—बुझव्या
मात ने तात ।।धन।।८।। सासु ससराने बुझव्या;
पुत्री आठनी नार, पाचशे सत्तावीश शु लीधोनी संयम भार ।९।
सुधर्मास्वामी पासे आव्या, विचरे छे मनउल्लास;
कर्म खपावीने केवल पामीया, पोहच्या मुक्ति मोझार
धन धन जंबूस्वामीने ।। १० ।।

अन्यत्व संबंधनी सज्झाय ।

केहना रे सगपण केहनी माया, केहना सज्जन सगाइ रे
सज्जन वर्ग कोइ साथ न आवे, आप आप कमाइ रे ।। के० ।।१।।
माहरु माहरु सहु कहे प्राणी, ताहरु कुण सहाइ रे ?
आप स्वारथ सहुने वहालो, कुण सज्जन कुण भाइ रे ? के० ।।२।।
चुलणी उदरे ब्रह्मदत्त आव्यो, जुओ मात सगाई रे,
पुत्र मारणने अग्नि कीधी, लाखनु घर नीपजावी रे।।के०।।३।।
काष्ट पंजर घाली मार, शस्त्र ग्रही दोड धाइ रे,
कोणिके निज तात ज हणीयो,
तो किहां रही पुत्र सगाई रे ? के० ।। ४ ।।

भग्त बाहुबल आपे लडीआ, आप आपे मजन थइ रे;
धार बरस संग्राम ज करीओ,
तो किहा रही भ्रात–सगाई रे ? के० ॥ ५ ॥

गुरू उपदेशथी गय प्रदेशी, सुधु समकित पाई रे,
स्वारथ विण सुरिकता नारी, मार्यो पीयु विप पाइ रे ॥ के० ॥६॥

निज अगजना अगज छेद, जुओ राग्रु केतु कमाई रे,
महु महुने निज स्वार्थ व्हालो, कुण गुरुने कुण माइ रे ? के०॥७॥

सुभूम फरसुराम ज दोय, माहोमाहे वेढ वनाइ रे,
क्रोध करीने नरके पोहोत्ता,
तो किहा रही तात सगाइ रे ? के० ॥ ८ ॥

चाणाक्ये तो पर्वत साधे, कीधी मित्र ठगाई रे,
मरण पामी ते मनमा हरख्यो,
तो किहा रही मित्र सगाई रे ? के० ॥ ९ ॥

आप स्वार्थ महुने व्हाला, कुण सजन कुण माइ रे,
जम राजानो तेडो आव्यो, टगमग जोवे भाइ रे ॥ के० ॥१०॥

माचो श्री जिनधर्म मखाइ, आराधो लय लाइ रे,
देवविजय कवि शिशनो इणी परे,
तत्वविजय सुखदाइ रे के० ॥ ११ ॥

वैराग्य पदनी सज्झाय

जीया सोच कुछ निज मनमे,तेरा कौन है आ जगतनमे ॥टेक०॥
तु माने मैं सबसे ऊँचा, फुला फिरता मगनमें ।
शुकर सुकर रासभ अत्यज,सम कोइ ऊँच न्गनमें ॥ जिया०॥१॥
ऊपर से बन ठन के मुखड़ा, देखत है दरपन में ।
अंदर गद भरा कर्मों का, धूर परी तुम तन म ॥ जि० ॥ २ ॥
हुँ मैं क्या मुज क्या करनी है, सोच नहीं एक खिनम ।
दौलत औरत खातिरदारी, लाग रही गीगन म ॥ जि० ॥ ३ ॥
धनपति निर्धन ठाकर चाकर, ऊँच नीच सब जगम ।
मियाकी स्वाक बने मिट्टीम,हिन्दुकी राख अगनमे ॥ जि० ॥४॥
गुमुतन और गमत रमत म, निर्लज्ज बन बचपन म ।
चटक मटक मगिया बस परक, खोइ उमर जोबनम ॥ जि० ॥५॥
अब क्या होवे बन गये बुढे, धरली लाठी करननम ।
बोलनकी मुखमे चलनकी, ताकत रही नहीं चरणमें ॥ जि०॥६॥
मात तात सुत द्वारा बधु, देत मदद मरननमें ।
परकी खातर अपना चूके, धिक् धिक् तुज समझनम ॥ जि०॥७॥
अखिर काम नाम प्रभु आवे, चेतन चेत स्मरनमे ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अनुपम, वल्लभ प्रभुके भजनमे ॥ जि० ॥८॥

---

(७)

(राग–गु वहु रचनी मारी राज०)

करी ल्यो धर्म हितकारी भविक तुमे,
करी ल्यो धर्म हितकारी ॥ अचली ॥

आ ससार सार न दीसे, दीसे असारता भारी ।
जन्म मरण दुःख डुगर मांहे,
भटकत दुनिया बिचारी ॥ भविक० ॥ १ ॥

राती सुई जिम रोम रोमे म, कोई मनुष्य ने चुभारी ।
तेथी आठगणु दुःख होवे, जन्म समयना मोझारी
॥ भविक० ॥ २ ॥

कोड विछी करडे एक साथे, तम मरण दुःखकारी ।
कोइ प्रदेशे जग नहीं खाली, जन्म मरण ज्या न धारी
॥ भविक० ॥ ३ ॥

रग छे पतग जेम आ तन तरो, विणसी जशे क्षण वारी ।
दारा सुता सुत धन घर छोडी, जाता बनीश लाचारी
॥ भविक० ॥ ४ ॥

राजा गया महाराजा गया ने, गया छे इन्द्र मोरारी ।
अचानक एक दिवसे उपडशु, आवशे तारी पण वारी
॥ भविक० ॥ ५ ॥

विषय विकारनी निद्रा लेतां, दिठी न सुखनी नारी ।
अनत भव भटकीने पाम्यो, सुदर नर अवतारी ॥ भविक० ॥ ६ ॥

पामी समय नहीं वृथा खोमो, करी ल्यो जन्म सुधारी ।
सूरि कमल चरणनो सेवक, लब्धि कह छे पोकारी ॥ भवि०॥७॥

श्री पर्युषणापर्व का स्तवन ।

(राग–सिद्धाचलना वासी जिनने क्रोडो कल्याण)

पर्व पर्युषण आव्या जाणी आनन्द अपार ॥ टेक ॥

श्री मुखसे प्रभु महावीर भाखे, पीस्तालीस आगमनी साखे ।
महिमा अपरपार ॥ जाणी ॥ १ ॥

पर्व माही पर्युषणा मोटो, इनसे है सहु पर्व छोटो ।
कल्पसूत्र मोझार ॥ जाणी ॥ २ ॥

महा पुण्य तुम पर्व ये पामी, भक्तिमां नहीं राखे खामी ।
कहतु हूँ बारबार ॥ जाणी ॥ ३ ॥

आठ दिवस कामोच्छव कीजे, नरभव केरो लाहो लीजे ।
पूजा करो उदार ॥ जाणी ॥ ४ ॥

गान तान करी गगन गजावो, नाद वाजीत्रण को नित्य बजावो
तप करो सुखकार ॥ जाणी ॥ ५ ॥

आत्मकमल में लब्धि वसावो, जयत का सहु कर्म निसावो ।
होवे बेड़ा पार ॥ जाणी ॥ ६ ॥

श्री महावीरस्वामी का जन्म पालणा गीत ।

(राग–जय जयवन्ती)

पालणो झुलत प्रभु वीर जिणद,
झुलावो श्री त्रिशलामैया ॥ पालणो ॥ १ ॥

रत्नकनकमय पालणु सोहे,
मगल गावे सब देव देवैया ॥ पालणो ॥ २ ॥

मोर मैना और पुतली जडिदा,
गीत गावत तिहा किन्नर गवैया ॥ पालणा ॥ ३ ॥

त्रण ज्ञान के धारी जिनेश्वर,
जग माया मे नाही नचैया ॥ पालणो ॥ ४ ॥

भर यौवन मे सयम पाये,
रमा रमणी का स्नेह हरैया ॥ पालणो ॥ ५ ॥

आतम कमल मे लब्धि ध्यावे,
धन्य हो जिनेश्वर शिवरमैया ॥ पालणो ॥ ६ ॥

श्री महावीरस्वामी स्तवन ।

(राग–हम भी महावीर के सिपाही बनेंगे)

आके वीर प्रभु के द्वार खड़ा,
रत्नचिंतामणि मेरी नजरे चढा ।

वर्द्धमान जिनेश्वर नाम बड़ा,
लेने मुक्ति को मैं तेरे चरणें पड़ा।
गुलफ कुलबुल ज्यु गुण गाहूँ,
मुबारक मुबारक मुँह से कहूँ ॥ आक० ॥ १

तेरा झौहर गुणों का है चमक रहा,
तेरे दरस को तरस रही है जहाँ।
आफताब हो! अंधेर मेरा हरो,
मेरा जल्दी ही भव से किनारा करो ॥ आके० ॥२

तेरी वाणी सुनी मेरा काम हुवा,
अब दुष्ट कर्म बदनाम हुआ।
तेरे ध्यान से मेरी बदल गइ दशा,
प्रभु तूँही तूँही है नयन में बसा ॥ आक० ॥ ३

गुण तेरे हमेरे दिलों में रहे,
तेरे हुकम का झण्डा सदा शिर वहे।
तेरा शासन चाद चकोर मना,
इससे आनद आनद खूब बना ॥ आके० ॥ ४

गुण गान तेरा सुधापान किया,
मानु अजरामर पद अब ही लिया।
मेरे आतम कमल मे विराज रहो,
सूरि लब्धि के चित्त म भक्ति रहो ॥ आके० ॥ ५

